सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-6: नगर , व्यापारी और शिल्पीजन

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मध्यकाल में अनेक नगरों और नगरों का विकास हुआ। इस समय के दौरान जो शहर प्रमुखता से उभरे, वे थे प्रशासनिक केंद्र, बंदरगाह शहर और मंदिर शहर।

मंदिर नगर और तीर्थ केंद्र

तंजावूर मंदिर नगर नगरीकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं। मंदिर अक्सर समाज और अर्थव्यस्था दोनों के लिए ही अत्यंत प्रक्रिया है। शासक , विभिन्न देवी-देवताओं के प्रति अपना भक्ति भाव दर्शाने के लिए मंदिर बनाते थे। मंदिर – मंदिर के कर्ता-धर्ता मंदिर के धन को व्यापर एवं सहकारी में लगाते थे।

धीरे-धीरे समय के साथ, बड़ी संख्या में पुरोहित -पुजारी, कामगार, शिल्पी, व्यापारी आदि मंदिर तथा उसके दर्शनार्थियो एवं तीर्थयात्रियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मंदिर के आस-पास बस्ते गए। गुजरात (सोमनाथ), तमिलनाडु (कांचीपुरम तथा मदुरै), आंध्र प्रदेश (तिरुपति) हैं।

मध्यकाल में, निम्नलिखित कारणों से भारत में कई मंदिर नगरों का उदय हुआ:

- मंदिर धन के बड़े केंद्र थे। कई तीर्थयात्रियों ने शहर का दौरा किया, जिससे शहर को राजस्व प्राप्त हुआ।
- चूंकि अधिकांश मंदिरों का निर्माण शासकों ने अपने धन और शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए किया था, इसलिए उन्होंने मंदिरों को कई भूमि अनुदान दिए।
- मंदिर के अधिकारियों ने न केवल त्योहारों को मनाने, अनुष्ठान करने और तीर्थयात्रियों को खिलाने के लिए धन का उपयोग किया, बल्कि व्यापार और बैंकिंग के वित्तपोषण में भी धन का निवेश किया।
- कई पुजारी, शिल्पकार, व्यापारी और कार्यकर्ता मंदिरों में आने वाले तीर्थयात्रियों को अपनी सेवाएं प्रदान करने के लिए मंदिरों के पास बस गए।
- इस काल के कुछ प्रसिद्ध मंदिर नगर तंजावुर (तमिलनाडु), विदिशा (मध्य प्रदेश), कांची और मदुरै (तमिलनाडु) और तिरुपति (आंध्र प्रदेश) थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• कई तीर्थस्थल भी प्रसिद्ध शहरों में विकसित हुए। उनमें से कुछ उत्तर प्रदेश में वृंदावन और तमिलनाडु में तिरुवन्नामलाई थे। अजमेर धार्मिक सह-अस्तित्व का केंद्र बन गया क्योंकि ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में सभी धर्मों के लोग आते थे। अजमेर के पास एक झील, जिसे पुष्कर के नाम से जाना जाता है, प्राचीन काल से तीर्थयात्रियों द्वारा दौरा किया गया था।

छोटे शहर

इस काल में अनेक छोटे नगरों का भी उदय हुआ। ये संभवतः बड़े गाँवों से विकसित हुए थे। इन शहरों में निम्नलिखित विशेषताएं थीं:

• इन कस्बों में मंडपिका (मंडी) या बाजार थे जहां से ग्रामीणों ने अपना माल खरीदा था।

• उनके पास सड़क बाजार भी थे जिन्हें हट्टा (हाट) कहा जाता था जहां विभिन्न प्रकार के सामान और वस्तुएं बेची जाती थीं।

• इन नगरों में कुम्हार, लोहार, चीनी बनाने वाले, तेल बनाने वाले आदि जैसे कारीगरों के लिए अलग सड़कें थीं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• दूर-दूर से बहुत से लोग इन छोटे शहरों में तरह-तरह के उत्पाद खरीदने आते थे। बहुत से लोग इन नगरों में केसर, सुपारी, नमक, मसाले आदि वस्तुओं को बेचने भी आते थे।
• बाद में, जमींदारों या सामंतों ने इन शहरों में अपना महलनुमा घर बनाया। वे व्यापारियों, व्यापारियों, दुकानदारों, कारीगरों आदि पर कर लगाते थे।
• कुछ मामलों में, उन्होंने स्थानीय मंदिर अधिकारियों को कर एकत्र करने का 'अधिकार' भी दिया।

तीन मुख्य नगरों का अध्ययन

आइए इस अवधि के दौरान तीन महत्वपूर्ण शहरों पर एक नजर डालते हैं।

हम्पी - विजयनगर साम्राज्य की राजधानी

• हम्पी शहर की स्थापना 1336 में हुई थी। यह विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी और एक अच्छी तरह से किलेबंद शहर था।
• यह शहर खूबसूरत मेहराबों, गुम्बदों और खंभों वाले हॉलों वाली विभिन्न स्थापत्य इमारतों का घर था।
• हम्पी में सुनियोजित बाग और बगीचे भी थे।
• अपने चरम पर, पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में, यह एक महान वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केंद्र था।
• मूर (मुस्लिम व्यापारी), चेट्टी और यूरोपीय व्यापारियों के एजेंट शहर में व्यापार करते थे।
• शहर में सुंदर मंदिर थे जो सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र थे।

विरुपाक्ष मंदिर शहर के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। महानवमी का त्योहार बहुत जोश और ऊर्जा के साथ मनाया जाता था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• 1526 में गोलकुंडा, अहमदनगर, बीजापुर, बरार और बीदर के दक्कन राज्यों द्वारा विजयनगर साम्राज्य की हार के बाद हम्पी को बर्बाद कर दिया गया था।

सूरत- एक बंदरगाह शहर

• गुजरात राज्य में सूरत मुगलों के शासन के दौरान पश्चिमी व्यापार का केंद्र था।

• शहर को 'मक्का का द्वार' भी कहा जाता था क्योंकि वहां से कई तीर्थयात्री जहाज रवाना होते थे।

• सूरत एक बंदरगाह शहर था जहां पुर्तगाली, अंग्रेजी और डच विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करते थे। एक अंग्रेजी लेखक के अनुसार, विभिन्न देशों के औसतन 100 जहाज बंदरगाह पर लंगर डाले हुए पाए जा सकते हैं।

• सूरत एक प्रमुख कपड़ा बाजार था। कई खुदरा और थोक दुकानें थीं जो सूती वस्त्र बेचती थीं। कपड़ा अपनी ज़री (सोने के फीते) के किनारों के लिए प्रसिद्ध था।

• शहर में यूरोपीय व्यापारियों के कारखाने और गोदाम थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• व्यापारिक उद्देश्यों के लिए विभिन्न देशों से सूरत आने वाले लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, कई विश्राम गृहों का निर्माण किया गया। शहर में भव्य इमारतें और उद्यान भी थे।

• सूरत भी इस समय एक प्रमुख बैंकिंग केंद्र था। सूरत हुंडियों को काहिरा (मिस्र), बसरा (इराक) और एंटवर्प (बेल्जियम) के दूर के बाजारों में स्वीकार किया गया था। हुंडी एक व्यक्ति द्वारा जमा किया गया एक नोट है। इस राशि का दावा जमा का नोट पेश करके कोई अन्य व्यक्ति कर सकता है।

• मुगल साम्राज्य के पतन के कारण, पुर्तगालियों द्वारा समुद्री मार्गों पर नियंत्रण और बॉम्बे से प्रतिस्पर्धा के कारण धीरे-धीरे शहर का पतन हुआ।

मसूलीपट्टनम- एक मछली पकड़ने का शहर

• मसूलीपट्टनम शहर जिसे मछलीपट्टनम भी कहा जाता है, वर्तमान आंध्र प्रदेश राज्य में कृष्णा नदी के डेल्टा पर स्थित था।

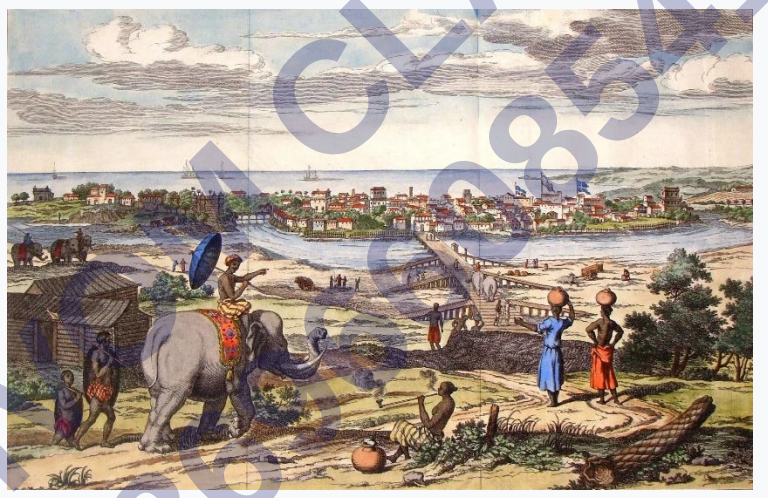

• यह एक बंदरगाह शहर था और डच और अंग्रेजी दोनों ने शहर पर नियंत्रण हासिल करने के प्रयास किए। शहर में किला डचों द्वारा बनाया गया था।

• शहर गोलकुंडा का एक हिस्सा था जिस पर कुतुब शाही शासकों का शासन था। यूरोपीय हाथों में व्यापार के पारित होने से बचने के लिए उन्होंने वस्त्रों, मसालों और अन्य उत्पादों की बिक्री पर विभिन्न कर लगाए।

• यूरोपीय, फारसी व्यापारियों और स्थानीय अमीरों जैसे विभिन्न समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा ने शहर को समृद्ध बना दिया।

• बाद में शहर मुगलों के हाथों में चला गया जब 1686-87 में औरंगजेब द्वारा गोलकुंडा पर कब्जा कर लिया गया था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• सत्रहवीं शताब्दी के अंत में, यूरोपीय व्यापारियों ने अपना आधार बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहरों में स्थानांतरित कर दिया क्योंकि इन शहरों को प्रशासनिक और वाणिज्यिक केंद्रों के रूप में भी विकसित किया जा सकता था।
• कभी मसूलीपट्टनम का हलचल भरा शहर धीरे-धीरे कम होने लगा और आज केवल एक छोटा सा शहर है।

प्रशासनिक केंद्र

चोल राज्य की राजधानी तंजावुर जो कावेरी नदी के पास बसा था, राजा राजराज चोल द्वारा निर्मित राजराजेश्वर मंदिर के निर्माण किया था। इस मंदिर के अलावा नगर में अनेक राजमहल है, जिसमें कई मंडप बने हुए हैं।

राजा लोग इन मंडपों में अपना दरबार लगाते हैं। नगर उन बाजारों में हलचल से भरा हुआ है ; जहाँ अनाज, मसलों, कपड़ो और आभूषणों की बिक्री हो रही है। उरैयूर में अभिजात वर्ग सूती वस्त्र और जनसाधारण के लिए मोटा सूती वस्त्र तैयार क्र रहे हैं।

तीर्थस्थल

तीर्थस्थलभी धीरे-धीरे नगरों के रूप में विकसित हो गए। वृंदावन (उत्तर प्रदेश) और तिरुवन्नमलाई (तमिलनाडु) ऐसे नगरों के दो उदाहरण हैं। अजमेर (राजस्थान) बारहवीं शताब्दी में चौहान राजाओं की राजधानी था सुप्रसिद्ध सूफी संत ख्वाज़ा मुइनुद्दीन यहाँ बस गए थे और उनके दर्शनार्थी एवं श्रद्धालु सभी पंथो-मतों के हुआ करते थे। अजमेर के पास ही पुष्कर सरोवर है, जहाँ प्राचीनकाल से ही तीर्थयात्री आते रहें है।

बड़े और छोटे व्यापारी

व्यापारी कई प्रकार के हुआ करते थे। उनमें बंजारे लोग भी शामिल थे। कई व्यापारी, विशेष रूप से घोड़ो के व्यापारी अपने संघ बनाते थे, जिनका एक मुखिया होता था और वह मुखिया उनका ओर से घोड़ा खरीदने के इच्छुक योद्धाओं से बातचीत करता था। अफ्रीका से सोना और हाथी दाँत एवं दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन से मसाले, टिन, चाँदी लेते थे ।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

नगरों में शिल्प

बीदर के शिल्पकार ताँबे तथा चाँदी में जड़ाई के काम के लिए इतने अधिक प्रसिद्ध थे की इस शिल्प का नाम ही ' बिदरी ' पड़ गया। पांचाल अर्थात विश्वकर्मा समुदाय जिसमें सुनार, कसेरे, लोहार, राजमिस्त्री और बढ़ई शामिल थे, मंदिरो के निर्माण के लिए आवश्यक थे वस्त्र-निर्माण से संबंधित कुछ अन्य कार्य जैसे -कपास को साफ करना, कातना और रंगना भी स्वतंत्र व्यवसाय बन गए थे, जिनके लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता होती थी।

नए व्यापारियों और शहरों का उदय

सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक, यूरोपीय व्यापारियों ने प्रमुखता हासिल करना शुरू कर दिया। वे मसालों और वस्त्रों का व्यापार करते थे जिनकी यूरोपीय देशों में अत्यधिक मांग थी। अंग्रेज, फ्रांसीसी और डचों ने भारतीय व्यापार तक पहुंच प्राप्त करने के लिए अपनी ईस्ट इंडिया कंपनियों का गठन किया। धीरे-धीरे, यूरोपीय शक्तियों ने अपनी नौसैनिक श्रेष्ठता के कारण समुद्री व्यापार पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया और भारतीय व्यापारियों को अपने एजेंटों के रूप में काम करने के लिए मजबूर कर दिया। अंग्रेज भारत में सबसे सफल आर्थिक और बाद में राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरे।

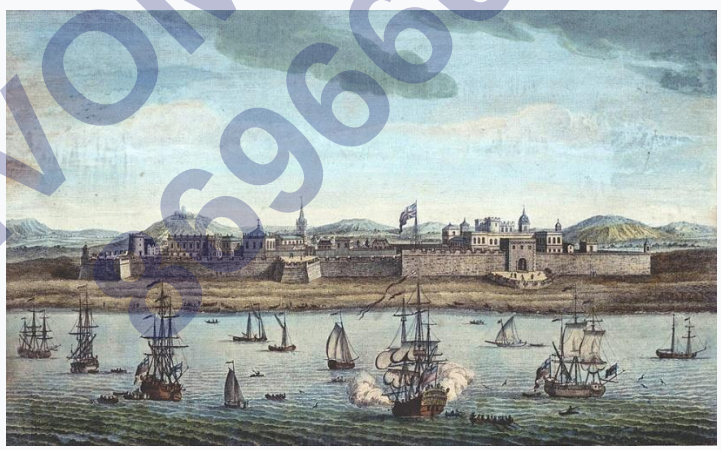

परिष्कृत और जटिल रूप से डिज़ाइन किए गए कपड़े और महान विदेशी बाजारों के साथ, भारतीय वस्त्रों का विस्तार इस समय शुरू हुआ। कताई, बुनाई, रंगाई आदि के शिल्पों का विस्तार हुआ।

जैसे-जैसे बहुत से लोग कपड़ा से संबंधित काम कर रहे थे, शिल्पकारों की स्वतंत्रता खोने लगी। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्होंने यूरोपीय लोगों से कर्ज लेना शुरू कर दिया था। इसका मतलब था कि उन्हें यूरोपीय एजेंटों से किए गए वादे के अनुसार कपड़ा बुनना था। बुनकरों ने

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भी अपनी स्वायत्तता खो दी क्योंकि अब उन्हें ऐसे डिजाइन तैयार करने पड़े जिनकी मांग यूरोपियों ने की थी।

इस समय के दौरान तीन शहर उभरे और प्रमुखता प्राप्त की, बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास। इन शहरों में यूरोपीय आबादी से मूल आबादी का स्पष्ट सीमांकन देखा गया था। यूरोपियों ने नगरों में किलों का निर्माण किया। वे मद्रास में सेंट जॉर्ज किले और कलकत्ता में सेंट विलियम्स किले के आवासों में रहते थे। इन्हें श्वेत बस्तियों के रूप में जाना जाने लगा क्योंकि इन पर यूरोपीय लोगों का कब्जा था। काले नगरों में स्थानीय कारीगर, व्यापारी और शिल्पकार निवास करते थे।

वास्को-डी-गामा

पंद्रहवी शताब्दी में यूरोपीय नाविकों द्वारा समुद्री मार्ग खोजने के अभूतपूर्व कार्य किए गए। पुर्तगाली नाविक वास्को-डी-गामा अटलांटिक महासागर के साथ यात्रा करते हुए केप ऑफ गुड होप से निकलकर और हिंद महासागर को पार करके 1498 (कालीकट) भारत पहुँचा।

क्रिस्टोफर कोलंबस

इटलीवासी क्रिस्टोफर कोलंबस 1492 में वेस्टइंडीज पँहुचा।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 89)

प्रश्न 1 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:-

(क) राजराजेश्वर मंदिर _____ में बनाया गया था।

(ख) अजमेर सूफी संत _____ में संबंधित है।

(ग) हम्पी _____ साम्राज्य की राजधानी थी।

(घ) हॉलैंड वासियों ने आंध्र प्रदेश में _____ पर अपनी बस्ती बनाई।

उत्तर –

(क) राजराजेश्वर मंदिर ग्यारहवीं सदी में बनाया गया था।

(ख) अजमेर सूफी संत ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती में संबंधित है।

(ग) हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी।

(घ) हॉलैंड वासियों ने आंध्र प्रदेश में मसूलीपट्टनम पर अपनी बस्ती बनाई।

प्रश्न 2 बताएँ क्या सही है और क्या गलत:-

(क) हम राजराजेश्वर मंदिर के मूर्तिकार (स्थपित) का नाम एक शिलालेख से जानते हैं।

(ख) सौदागर लोग काफ़िलों में यात्रा करने की बजाय अकेले यात्रा करना अधिक पसंद करते थे।

(ग) काबुल हाथियों के व्यापार का मुख्य केंद्र था।

(घ) सूरत बंगाल की खाड़ी पर स्थित एक महत्वपूर्ण व्यापारिक पत्तन था।

उत्तर –

(क) हम राजराजेश्वर मंदिर के मूर्तिकार (स्थपित) का नाम एक शिलालेख से जानते हैं। (सही)

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(ख) सौदागर लोग काफ़िलों में यात्रा करने की बजाय अकेले यात्रा करना अधिक पसंद करते थे। (गलत)

(ग) काबुल हाथियों के व्यापार का मुख्य केंद्र था। (गलत)

(घ) सूरत बंगाल की खाड़ी पर स्थित एक महत्वपूर्ण व्यापारिक पत्तन था। (गलत)

प्रश्न 3 तंजावूर नगर को जल की आपूर्ति कैसे की जाती थी ?

उत्तर – वर्ष में बारहों महीने बहने वाली कावेरी नदी के पास यह तंजावूर नगर बसा हुआ था। यह नगर बाजारों की हलचल से भरा हुआ था, जहा अनाज, मसालों, कपड़ों और आभूषणों की बिक्री होती है। यहाँ कुओ और तालाबों से जल की आपूर्ति की जाती थी।

प्रश्न 4 मद्रास जैसे बड़े नगरों में स्थित 'ब्लैक टाउन्स' में कौन रहता था ?

उत्तर – ब्लैक यानि देसी व्यापारियों और शिल्पकारियों को ब्लैक टाउन्स में सीमित कर दिया था। वहां व्यापारियों और शिल्पकारियों के अतिरिक्त सभी बुनकर जैसे कारीगर और सोदागर इन सबको भी ब्लैक टाउन्स में रखा गया।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 90)

प्रश्न 5 आपके विचार से मंदिरों के आस-पास नगर क्यों विकसित हुए ?

उत्तर – मंदिर के कर्ता – धर्ता मंदिर के धन को व्यापारी एवं साहूकारी में लगाते थे। धीरे–धीरे समय के साथ बढ़ी संख्या में पुरोहित–पुजारी, कामगार, शिल्पी, व्यापारी आदि मंदिर तथा उसके दर्शनार्थियों और तीर्थं यात्रियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मंदिरों के आस पास बसते गए। इस प्रकार मंदिरों के आस पास नगरों का विकास होता गया। इसी रीति से मंदिरों के चारों ओर अनेक नगरों का आविर्भाव हुआ :- जैसे मध्य प्रदेश में भीलसा या विदिशा और गुजरात में सोमनाथ। कुछ अन्य महत्वपूर्ण नगर:- तमिलनाडु में कांचीपुरम तथा मदुरै और आन्ध्र प्रदेश में तिरुपति है।

प्रश्न 6 मंदिरों के निर्माण तथा उनके रख-रखाव के लिए शिल्पीजन कितने महत्वपूर्ण थे ?

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – शिल्पकार ताम्बे तथा चाँदी में जड़ाई के काम के लिए इतने प्रसिद्ध थे कि इनका नाम बीदरी पड़ गया था। इसके साथ ये शिल्पीजन मंदिर निर्माण के रख रखाव में भी महत्त्व रखते थे। ये पांचाल अर्थात विश्वकर्मा समुदाय जिसमें सुनार, किसान, लोहार, राजमिस्त्री और बढ़ई भी मंदिर निर्माण के लिए आवश्यक थे। सालियार तथा कैक्कोलार जैसे बुनकर भी समृद्धशाली समुदाय बन गए थे और मंदिरों में भारी दान दक्षिणा भी दिया करते थे। वस्त्र निर्माण से सम्बंधित कुछ अन्य कार्य जैसे:- कपास को साफ करना, कातना और रंगना भी स्वतंत्र व्यवसाय बन गए थे, जिनके लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता होती थी।

प्रश्न 7 लोग दूर-दूर के देशों- प्रदेशों से सूरत क्यों आते थे ?

उत्तर – सूरत एक सर्वदेशीय नगर था, जहां सभी जातियों और धर्मों के लोग रहते थे। सत्रहवीं शताब्दी में वहां पुर्तगालियों, डचों, और अंग्रेजों के कारखाने एवं मालगोदाम थे। सूरत में अनेक ऐसी दुकानें थी जो सूती कपड़ा, थोक और फूटकर कीमतों पर बेचती थी। सूरत के वस्त्र अपने सुनहरी जरी के लिए प्रसिद्ध थे और उनके लिए पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप में बाजार उपलब्ध थे। राज्य ने विश्व के सभी भागों से नगर में आने वाले लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक विश्रामगृह बना रखे थे। वहां भव्य भवन व असंख्य मनोरंजक स्थल थे। सूरत में काठियावाड़ी सेठो तथा महाजनों की बड़ी बड़ी साहूकारी कम्पनियां थी। इसी कारण लोग दूर दूर के देश प्रदेशों से सूरत आते थे।

प्रश्न 8 कलकत्ता जैसे नगरों में शिल्प उत्पादन तंजावूर जैसे नगरों के शिल्प उत्पादन से किस प्रकार भिन्न था ?

उत्तर – कलकत्ता जैसे नगरों में शिल्प उत्पादन तंजावूर जैस नगरों के शिल्प उत्पादन से निम्न प्रकार से भिन्न था:- कलकत्ता जैसे नगरों के शिल्पकारों को (ब्लैक टाउन में रहना पड़ता था तथा उनके द्वारा बना माल ईस्ट इंडित कंपनी ही खरीद लेती थी , लेकिन तंजावूर जैसे नगरों के शिल्पकार अपना बना माल अपने ढंग से बेचते थे। कलकत्ता जैसे नगरों के बुनकरों को उनके द्वारा बुना गया कपड़ा यूरोपीय कंपनियों के एजेंटों द्वारा खरीद लिया जाता था लेकिन तंजावूर जैसे नगरों में यह व्यवस्था नहीं थी। कलकत्ता में मुख्यतः शिल्प उत्पादन सूती, रेशमी उत्पादन तक सीमित था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

तंजावूर एक मंदिर नगर के रूप में प्रसिद्ध था, यहाँ कास्य मूर्तियाँ, धातु के दीपदान, मंदिरों की घंटियों आभूषणों आदि का बड़े पैमाने पर निर्माण होता था ।

SHIVOM CLASSES
8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)